IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# डॉ0 भास्कराचार्य त्रिपाठी का जीवन एवं उनके द्वारा विरचित नाटक 'स्नेहसौवीरभ् में अलंकार योजना

Dharam Singh
Assistant Proferssor
Govt. College Bhattu Kalan (Fatehabad)

संस्कृत साहित्य का विश्व साहित्य में अद्वितीय स्थान है। भारतीय विद्वानों ने ही नहीं अपितु अनेक पाश्चात्य विद्वानों ने भी संस्कृत साहित्य की उत्कृष्टता की भूरि–भूरि प्रशंसा की है। काव्य की विभिन्न विधाओं में सर्वाधिक महत्वर्पूण रूपक है। रूपक रचना को कवित्व की चरम सीमा माना गया है। इसमें श्रव्य व दृश्य दोनों प्रकार के काव्यों की विशिष्टता समाविष्ट है। मेरी रूचि विशेष रूप से रूपकों में होने के कारण मैने डॉ0 भारकाराचार्य त्रिपाठी द्वारा विरचित नाटक के एक अंश का शोध पत्र हेतु चयन किया है। प्रस्तुत शोध पत्र में स्नहेहसौवीरम् नाटक के अन्तर्गत रस विवेचन पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। फिर भी ज्ञान की सीमाओं को देखते हुए कुछ त्रुटियाँ रह जाना कोई आश्चर्य की बात नहीं होती है। प्रस्तुत शोध पत्र में सर्वप्रथम लेखक के जीवन पर प्रकाश डाला गया है तदुपरान्त उनके नाटक (रूपक) स्नेहसौवीरम् में रस विवेचन को वर्णित किया गया है।

डॉ0 भास्कराचार्य त्रिपाठी – डॉ0 भास्कराचार्य त्रिपाठी का जन्म प्रयाग चित्रकुट अंचल में अवस्थित पाण्डर ग्राम में अनन्त चतुर्दशी □□□□ (23.09.1942) को हुआ था। इनका बचपन ज्योतिष विद्या के पारंगत विद्वान पिता श्री रामप्यारे त्रिपाठी की सारस्वत छाया में बीता। स्नेहसौवीरम् के प्रणेता ने उन्हें जन्मदो ज्योतिषां व्योम्नि वेल्लतत्विषां कोविदो रामवत् सुप्रियः प्राणवद्।

ये कसौटा नरेश के दरबार में प्रधान ज्योतिषी थे। इन्होने स्नातक उपाधि से दीक्षाएं इलाहाबाद विश्वविद्यालय से प्राप्त की। मध्यप्रदेश की शासकीय शिक्षा सेवा में छतरपुर, अम्बिकापुर तथा रीवा के स्नातकोतर महाविद्यालय इनके कार्यस्थल रहे। इनको अनेक पुरस्कारों द्वारा भी अभिनन्दित किया गया है। इन्होने समकालीन संस्कृत रचना धर्मिता से जुड़ी अनके रचनाऐं लिखी जिनमे गद्यद्वादशी, अजाशती, लक्ष्मीलांछनम्, सुतनुकालास्यम्, मृत्कूटम्, निलिम्प काव्यम्– निर्झरिणी, संस्कृतजीवनम, स्नेहसौवीरम् मानसमधु, दूर्वा (24 अंक) भोजभारती, संस्कृत की पहचान, बदले पंख, तौर्यत्रिकम्, लघु–रघु आदि। उन्होने 1958 में लेखन कार्य आरम्भ किया। वे 2004 में उच्चशिक्षा विभाग म0 प्र0 से विभागाध्यक्ष के पद से सेवानिवृत्त हो चुके है। डॉ0 भास्काराचार्य त्रिपाठी को उनके लघु काव्य मृत्कूटम् पर दिल्ली संस्कृत अकादमी तथा उतर प्रदेश संस्कृत अकादमी द्वारा विशिष्ट पुरस्कारों से अभिनन्दित किया गया है। उन्होंने अपनी संस्कृत कविता पाण्डरग्रामः में जन्मभूमि के संदर्भ में लिखा है :

रजः पाण्डरा नित्यमुदयते मनसि पाण्डरोग्रामः

तृणे–तृणे बन्धुता यत्र पवने च वैरविश्रामः।

साकेत विरहस्य कल्पशः स्वयं कुटुम्बी रामः

आजिगमिषति यम ध्वनीन इव सोयं धन्यो।।[2]

## अलंकार योजना

अलंकार का अर्थ – आभूषण अर्थात सुन्दरता बढ़ाने के लिए प्रयुक्त होने वाले वे साधन जो काव्य या नाटक के सौन्दर्य में चार चाँद लगा देते है। अलंकार शब्द अलम् और कार के योग से बना है जिसका अर्थ होता है आभूषण या विभूषित करने वाला। जो विभूषित करे वह अलंकार है। अलंकार कविता कामिनी की शोभा बढ़ाने वाले होते है जिस प्रकार आभूषण से नारी का लावण्य बढ़ जाता है उसी प्रकार अलंकार से कविता या नाटक की शोभा बढ़ जाती है। शब्द और अर्थ की जिस विशेषता से काव्य का श्रृंगार होता है उसे ही अलंकार कहा गया है – अलंकरोति इति अलंकार है।

अलंकार के भेद – मुख्य रूप से अलंकार को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। शब्दालंकार और अर्थालंकार। आचार्य मम्मट ने अपनी सुप्रसिद्ध रचना काव्य प्रकाश में 67 प्रकार के अलंकारों के भेद की चर्चा की है। भरतमुनि ने 4, वामन ने 33, दण्डी ने 35, भामह ने 39, उद्भट्ट ने 40, रूद्रट ने 52, जयदेव ने अपनी रचना चन्द्रालोक में 100 और अप्पयदीक्षित ने कुवलयानन्द में 124 अलंकारों की बात कही है। भारतीय साहित्य में अनुप्रास, उपमा, रूपक, अनन्वय, यमक, श्लेष, उत्प्रेक्षा, संदेह, अतिश्योक्ति, अर्थान्नतरन्यास, वक्रोक्ति आदि प्रमुख अलंकार है। इनके अतिरिक्त भी बहुत से अलंकार है।

डॉ0 भास्कराचार्य त्रिपाठी की कृतियों में रस–पोषण के हेतू अलंकारों की योजना सम्पन्न हुई है। जिस प्रकार हारादि अलंकार नैसर्गिक सौन्दर्य की वृद्धि में उपकारक होते हैं, उसी प्रकार उपमा आदि अलंकार काव्य की रसात्मकता के उत्कर्ष हैं। युनानी काव्यशास्त्र के अनुसार अलंकार उन विधाओं का नाम है जिनके प्रयोग द्वारा श्रोताओं के मन में वक्ता अपनी इच्छा के अनुकूल भावना जगाकर उनको समर्थ बना सकता हैं।[3] दण्डी ने काव्य की शोभा करने वाले धर्म को अलंकार माना है।[4] वामन भी काव्य की शोभा करने वाले धर्म को अलंकार मानते हैं।[5] मम्मट का कथन है कि –

उपकुर्वन्ति तं सन्तं येऽङ्गद्वारेण जातुचित्।

हारादिवदलंऽकारास्तेऽनुप्रासोपमादयः।।[6]

अर्थात् जो धर्म, अंग अर्थात् अंगभूत शब्द और अर्थ के द्वारा उसमें (उत्कर्ष उत्पन्न कर) विद्यमान होने वाले उस (अंगी) रस का हार इत्यादि के समान कभी उपकार करते हैं, वे अनुप्रास, उपमा अदि अलंकार कहलाते हैं। कुन्तक ने 'सालंकारस्य काव्यता' कहकर अलंकार को काव्य का अविभाज्य अंग माना है।[7] अलंकारों से भाषा और भावों की नग्नता दूर होकर उसमें सुषमा और सौन्दर्य की वृद्धि होती है। नाटककार भाषा द्वारा जिन भावों का परिचय देना चाहता है, वह परिचय साधारण भाषा द्वारा नही दिया जा सकता। इसके लिये हृदय को स्यन्दित करने वाली विशेष भाषा सालंकार भाषा ही उपयोगी है।

अलंकार समृद्धि की दृष्टि से स्नेहसौवीरम् नाटक अत्यन्त महत्वपूर्ण है। डॉ0 त्रिपाठी को उपमा, रूपक एवं अनुप्रास अलंकार परम् प्रिय हैं। स्नेहसौविरम् नाटक में डॉ0 त्रिपाठी द्वारा भावों को स्वाभाविक रूप देने के लिये उपमा, उत्प्रेक्षा, अनुप्रास,

2

रूपक, अतिशयोक्ति, यमक, संकर, स्वभावोक्ति एवं अर्थान्तरन्यास अलंकारों का प्रयोग किया गया है – जिनकी योजना इस प्रकार है –

1. उपमा

'साधर्म्यमुपमा भेदें'[8]

अर्थात् (उपमान और उपमेय) भेद होने पर दोनों का गुण, क्रिया धर्म की समानता का वर्णन उपमलांकार है।

स्नेहसौविरम् नाटक में डॉ0 त्रिपाठी ने उपमा अलंकार का सुन्दर प्रयोग किया है। द्वितीय अंक का छठा श्लोक उपमा अलंकार का अनुपम उदाहरण है –

छिन्नं छिन्नं बल्कवासो वसाना
भूयः प्रह्वा कृष्णसाराङग्नेव
तन्वी सेयं बन्धुरावन्यवीथीं
वक्त्रश्वासैर्माजयन्ति लुलोके।[9]

यहाँ शबरी की तुलना हिरनी से की गई है इसलिये उपमा अलंकार है।

2. उत्प्रेक्षा –

जो प्रकृत वस्तु (वर्णनीय) की सम अर्थात् उपमान के साथ सम्भावना करना है, वही उत्प्रेक्षा अलंकार है।[10]

उदाहरण :–

काचिन्मल्लीं–परिमलमयीं कीरणासा मृगाक्षी

श्यामा वामा स्फटिक सुदतीं वेल्लित स्वर्णकेशी,

प्रव्रज्यायै वनमुपगता कामिनी शङग्नींया

विश्वामित्रं छलयितृमना नूतना मेनकेव।[11]

3 अनुप्रास –

वर्णों की समानता अनुप्रास अलंकार है।[12] वर्णसाम्य अर्थात् स्वरों के असमान होने पर भी व्यंजनों की समानता। रस आदि के अनुकूल बहुत व्यवधान से रहित चमत्कारजनक योजना ही अनुप्रास है।

उदाहरण – अमृत जाहवीनीरं कावेरीवारि पावनम्

कणशः कृशरीभूय कर्षेतां कृशतां तव।[13]

4 रूपक –

जो उपमान और उपमेय का अभेदारोप है, वह रूपक अलंकार कहलाता है।[14]

उदाहरण

शबरी में तपः शक्तिः कानने पूर्वसंस्थिता
द्वीपदीपायिता दुःखे प्रबोध्य विलयं गता।[15]

5. अतिशयोक्ति :–

उपमान के द्वारा 'प्रकृत' उपमेय का निगरण करके उसके साथ कल्पित अभेद का निश्चय, वर्णनीय का अन्य रूप से वर्णन, यदि अर्थ वाले शब्दो का कथन करके कल्पना और कार्य तथा कारण के पूर्व तथा अपर–भाव का विपरीत होना वर्णित किया जाता है वह अतिशयोक्ति जाननीं चाहिये।[16]

उदाहरण :–

वायुदोषोऽतिसारश्च श्रमजन्या विवर्णता,
पक्वफेनिलगन्धेन पलायन्ते वनान्तरे।[17]

प्रस्तुत उदाहरण में बेर के गुणों को बढ़ा चढ़ा कर वर्णित करना अतिशयोक्ति अलंकार है।

5 यमक :–

अर्थ होने पर, भिन्न–भिन्न अर्थ वाले वर्ण समुदाय का पूर्व क्रम से ही आवृत्ति यमक अलंकार कहलाता है।[18]

उदाहरण –

प्रशमितान्तर – तान्तरसोमिभिः

स विषयीक्रियते न समाधिभिः।[19]

यहां तान्तर तान्तर का अर्थ भिन्न–भिन्न होने पर यमक अलंकार है।

7. संकर –

अपने स्वरूप में निरपेक्षभाव से पर्यवसित न होने वाले उपर्युक्त अलंकारों का अंग तथा अंगीं रूप से स्थित होना संकर अलंकार है।[20]

उदाहरण :–

अलातचक्रायितकीर्त्तनावली

रतिश्च काचित् सरिदूर्मिमंजुला,

प्रवर्त्तते पुंसि चराचरेश्वरे

न वा नवालोकितया तपस्यया।[21]

यहाँ रूपक और उपमा का सापेक्षभाव है इसलिए संकर अलंकार है।

8. स्वभावोक्ति –

स्वभावोक्ति वह अलंकार है जहाँ बालक आदि की स्व आश्रित क्रिया तथा रूप आदि का वर्णन किया जाता है।[22]

उदाहरण :–

यदेते स्वाहाभिः स्नपितमरूतो वान्ति पुरतो

मृगाली सन्तुष्टा भ्रमति न मरीचिभ्रममुखी,

तरूस्तम्बे चित्रा विलसति च सौत्री गुणनिका

तदम्यर्णे मुक्तिप्रदमिह भवेदाश्रमपदम्।[23]

3 अर्थान्तरन्यास –

सामान्यं वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते।
यत्तु सोऽर्थान्तरन्यासः साधर्म्येर्णेतरेण वा।।[24]

अर्थात अर्थान्तरन्यास वह अलंकार है जहाँ साधर्म्य या वैधर्म्य के विचार से सामान्य या विशेष वस्तु का उससे भिन्न के द्वारा समर्थन किया जाता है।

उदाहरण :– बन्धुर्न वध्य इति रोषभराभिभूता –

नस्मान्निषिध्य वृतवानसि ऋष्यमूकम्,

तत् पीडया किमिति चीत्कुरूष तरस्विन्

शापा निरर्थकगिरोऽपि जनं लगन्ति।[25]

इस प्रकार डॉ0 त्रिपाठी को उपमा, रूपक एवं अनुप्रास अलंकार परम प्रिय हैं। इन्होने अपने नाटक में उमाओं का बहुत सुन्दर प्रयोग किया है। उपमा के अतिरिक्त इन्होंने अनुप्रास (अन्त्यानुप्रास) उत्प्रेक्षा और रूपक अलंकारो का प्रयोग भी प्रचुर मात्रा में सफलता पूर्वक किया है।

Dharam Singh

Assistant Proferssor

Govt. College Bhattu Kalan (Fatehabad)

## पाद टीका

1 मृत्कूटम् – पृश्ठ टप्प
2 निर्झरिणी पृश्ठ 77–78
3 हिन्दी साहित्य कोष, ज्ञानमण्डल, काषी, वि.स.2015 पृश्ठ 60
4 काव्य षौभायाः कर्तायें धर्माः गुणाः।

तदतिषय हेतवस्तलंकारा।। का. अ. सूत्रवृति 3.12

5 काव्यषोभाकरान् धर्मान् अंलकरान् प्रचक्षते। काव्य अलंकार 2.1
6 काव्य. प्र. 8.67 पृश्ठ 4.9
7 अलकृतिरलंकार्यमयोद्वत्य विवेच्यते। तदुपायतया तत्वं सालंकारस्य काव्यता।। वक्रोक्ति जीवितम्. 1.6
8 काव्य प्रकाष 10.125 पृश्ठ 468।

9 स्नेहसौवीरम् अंक 2 ष्लोक संख्या 6
10 स्म्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समन यत्। समने उपमानने। काव्य प्रकाष 10 137।
11 स्नेहसौवीरम् अंक 2 ष्लोक संख्या 7
12 वर्णसाम्यानुप्रासः। काव्य प्रकाष 9.104।
13 स्नेहसौवीरम् अंक 2 ष्लोक संख्या 10
14 तद्रूपकमभेदों य उपमानोपमेययोः। काव्य प्रकाष 10.139
15 स्नेहसौवीरम् अंक 5 ष्लोक संख्या 21।
16 निगीर्याध्यवसानन्तु प्रकृतस्य प्ररेण यत्।

प्रस्तुतस्य यदन्यत्वं यद्यर्थोक्तौ च कल्पनम्।। काव्य प्रकाष 10.100।

17 स्नेहसौवीरम् अंक 4 ष्लोक संख्याा 9।
18 अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सां पुनः श्रुति यमकम्। काव्य प्रकाष 9.117।
19 स्नेहसौवीरम् अंक प्रथम ष्लोक संख्या 6
20 अविश्रान्ति जुषामात्मन्यऽगत्वं तु संकर :। काव्य प्रकाष 10.108।
21 स्नेहसौवीरम् अंक 2 ष्लोक संख्या 4
22 स्वभावोक्तिस्तु डिम्भादेः स्वक्रिया रूप वर्णनम्। काव्य प्रकाष 10.168।
23 स्नेहसौवीरम् अंक 3 ष्लोक संख्या 12।
24 सामान्यं वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते।

यत्तु सोऽर्थान्तरन्यासः साधर्म्येर्णेतरेण वा।। काव्य प्रकाष 10.165।

25 स्नेहसौवीरम् अंक 4 ष्लोक संख्या 1

**सन्दर्भ** सूची


1 संस्कृत काव्यषास्त्र का इतिहास पी वी काणे

2 संस्कृत साहित्य का इतिहास आचार्य बलदेव उपाध्याय

3 काव्यप्रकाष चौखम्बा विदयाभवन वाराणसी

4 दशरुपक साहित्य भंडार मेरठ

5 नाटयषास्त्र भरतमुनि

6 भाव प्रकाषन

7 साहित्य दपण आचार्य विष्वनाथ

8 स्नेहसौवीरम् **डॉ0 भास्कराचार्य त्रिपाठी**